अध्ययन सामग्री
विषय - हिन्दी
वर्ग - स्नातकोत्तर
सेमेस्टर - III
प्रश्न पत्र - XI

सुमन कुमारी
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
हरप्रसाद दास जैन कॉलेज आरा

'फीचर'

फीचर

समाचारपत्रों में जो समाचार छपते हैं उनसे यह तो मालूम हो जाता है कि क्या हुआ? अग्रलेखों में रोज की घटनाओं पर पत्र की राय भी पाठक को मालूम हो जाती है, पर जो कुछ हुआ, वह क्यों हुआ और उसका परिणाम भविष्य में क्या होगा, इसे भी पाठक जानना चाहता है। इसी बात को बताने वाले लेखों को 'फीचर' कहते हैं ये हमेशा सामयिक विषयों पर लिखे जाते हैं। "फीचर" मनोरंजक ढंग से और सरल भाषा में लिखे जाते हैं।

लेख व फीचर :- कुछ ऐसी विशेषताएँ होती हैं जो लेख और फीचर में समान रूप से पायी जाती हैं। लेख भी अक्सर फीचर का रूप ग्रहण कर लेता है और फिर फीचर में भी लेख के लक्षण दीख पड़ते हैं। इस समानता के बावजूद दोनों में से प्रत्येक का अपना अलग रूप तथा वैशिष्ट्य है। लेख लिखते समय तथ्यों, आँकड़ों आदि की आवश्यकता होती है। इस कारण लेख लिखना आसान होता है। लेख नीरस व गंभीर भी हो सकता है किन्तु फीचर अत्यंत सरल और वार्तालाप की शैली में ही श्रेष्ठ हो सकता है।

लेख उस महल के सदृश होता है जिसमें कई कमरे और कई मंजिलें हों, लेकिन 'फीचर' की तुलना एक साफ-सुथरे छोटे कमरे से की जा सकती है। लेख हमें शिक्षा देता है, फीचर मनोरंजन करता है। फीचर लिखने में हास्य और कल्पना

की अधिक गुंजाइश है।

फीचर के भेद :- वर्ण्य विषय की विविधता के आधार पर फीचर के अनेक भेद किए जा सकते हैं। उनके कुछ भेद इस प्रकार हैं—

1. व्यक्तित्व सम्बन्धी फीचर :- भारतीय पत्रकारिता में ऐसे फीचर बड़े लोकप्रिय हैं। उन महापुरुषों को लेकर अच्छे फीचर लिखे जा सकते हैं, जो जनता के मन में घर चुके होते हैं।

2. पौराणिक फीचर :- भारतीय पर्वों के अवसर पर उनके धार्मिक महत्व को दर्शाने के लिए ऐसे फीचर लिखे जाते हैं। इनमें उन देवी-देवताओं की कथाओं का वर्णन किया जाता है जिनकी स्मृति इन उत्सवों तथा मेलों के रूप में कायम रखी गयी है।

3. कुतूहलवर्द्धक फीचर – ऐसे फीचर ब्रिटिश तथा अमेरिकन पत्रकारिता की उपज हैं। अब भारतीय पत्रों में भी ऐसी फीचर लिखे जाने लगे हैं। अलौकिक, विचित्र और असाधारण घटनाओं पर आधारित ऐसे फीचर बड़े चाव से पढ़े जाते हैं।

4. चित्रमय फीचर :- इनमें चित्रों के सहारे सारा कथानक लिख दिया जाता है।

5. व्यंग्य फीचर :- इस प्रकार के फीचर व्यंग्य कार्टून से काफी साम्य रखते हैं। भारत के सुप्रसिद्ध व्यंग्य-चित्रकार ने ब्रिटिश शासनकाल के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ भारतीयों में चेतना जगाने के उद्देश्य से ऐसे चित्रों का निर्माण आरम्भ किया था। आगे चलकर सामाजिक कुरीतियों तथा दोषों का निराकरण करने के लिए इस कला का उपयोग किया जाने लगा।

Scanned with CamScanner

फीचर लिखने में बाधाएँ :- जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, फीचर की आत्मा मनोरंजन है। भारत में जब से पत्रकारिता का प्रारंभ हुआ, उसे अपने अस्तित्व के लिए शासन से लड़ना पड़ा था। आगे चलकर तो भारतीय पत्रकारिता स्वतंत्रता - संग्राम का पर्याय बन गयी। मुद्रण की पर्याप्त व्यवस्था भी नहीं थी। फलतः पराधीन भारतीय भारत में 'फीचर' कला का विकास नहीं हो सका। अब आजाद भारत में हालात में परिवर्तन हुए हैं, फिर भी इस कला का यथेष्ट विकास नहीं हो पाया है।

भारतीय पत्रकारिता में यह सामान्यतः देखा जाता है कि पत्रों के अधिकांश लंबे वक्तव्यों तथा उबाऊ भाषणों से भरे होते हैं फलतः पत्र नीरस - से लगते हैं। फीचरों के लिए उनमें प्रायः बहुत थोड़ी जगह बचती है। पर धीरे - धीरे इसकी ओर ध्यान जाने लगा है और लंबे-लंबे वक्तव्यों को काट-छाँटकर छोटे लेख लिखने की प्रवृत्ति बढ़ने लगी है।

हमारे यहाँ 'दि इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया', 'स्टेटसमैन', 'टाइम्स ऑफ इंडिया' और 'नेशनल हेराल्ड' आदि पत्र फीचर छापने की ओर विशेष ध्यान देते हैं और फीचर - लेखकों को प्रोत्साहित करते हैं।

Scanned with CamScanner